साढ़े तेरह हज़ार फुट ऊंचे दर्रे के नीचे सुरंग

रेणु भट्टाचार्य

मैदानी इलाकों में रहने वाले हम जैसे लोगों को पहाड़ों का जीवन बड़ा सुहावना लगता है क्योंकि लोग पहाड़ों पर या तो घूमने जाते हैं या मैदानी इलाकों की असहनीय गर्मी से बचने के लिए कुछ दिन गुज़ारने के लिए वहां चले जाते हैं। लेकिन जिनकी पूरी ज़िन्दगी पहाड़ों पर बीतती है उनके लिए पहाड़ बहुत परेशानी वाले होते हैं, खासकर ठंड के दिनों में।

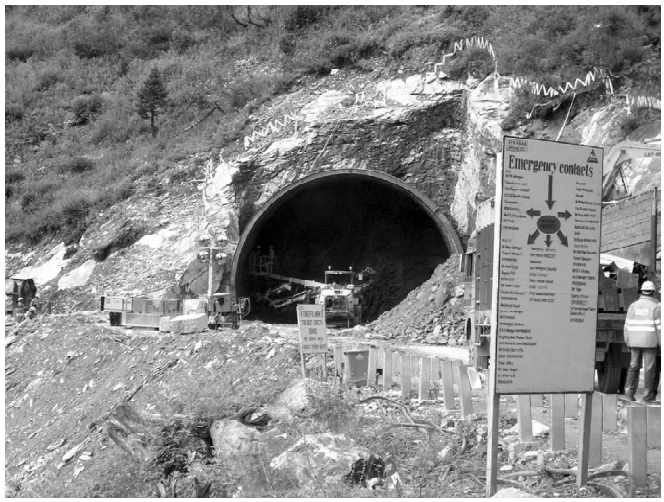

सर्दियों के दौरान सदियों से शेष दुनिया से कटे रहने का दर्द झेल रहे हिमाचल प्रदेश के एक बड़े जनजातीय हिस्से को आने वाले दो-तीन सालों में हमेशा के लिए इस कष्ट से मुक्ति मिलने वाली है। लगभग साढ़े तेरह हज़ार फुट ऊंचे रोहतांग दर्रे के नीचे बनाई जा रही सुरंग के पूरा होने के बाद राज्य की लाहौल घाटी के साथ-साथ पांगी घाटी के हज़ारों लोग पूरा साल घाटी के बाहर आ-जा सकेंगे। सीमा सड़क संगठन द्वारा बनाई जा रही इस सुरंग के अगले दो-ढाई सालों में पूरा हो जाने की उम्मीद है। इस सुरंग के बनने से हिमाचल के इस जनजातीय क्षेत्र के लोगों की दुनिया ही बदल जाएगी।

लाहौल घाटी के लोगों के लिए रोहतांग दर्रा एक ऐसी दीवार के समान है जो सर्दियों में बर्फ पड़ने पर उनका रास्ता रोक लेता है। इस दीवार को पार करने की कोशिश करना सीधा मौत को आमंत्रण देने जैसा है। सर्दियों में जहां भारी बर्फबारी के बीच कोई इसे पैदल पार करने के बारे में सोच भी नहीं सकता वहीं सर्दियां शुरू होने से पहले भी यहां अचानक होने वाली बर्फबारी कभी भी इसे पैदल पार करने का दुस्साहस करने वालों को मौत के मुंह में पहुंचा सकती है। रोहतांग और मौत के बीच की दूरी को काफी कम माना जाता है। यही वजह है कि जनजातीय भाषा में रोहतांग दर्रे का शाब्दिक अर्थ भी मौत से जुड़ा हुआ है। लाहौली भाषा में रोहतांग का अर्थ लाशों का ढेर है। यानी यहां बरपने वाला कुदरत का कहर कभी भी लोगों को लाशों में तबदील करने की सामर्थ्य रखता है।

रोहतांग सुरंग के निर्माण को लाहौल घाटी के लोग बड़ी आशा भरी नज़रों से देख रहे हैं। लाहौल घाटी के लगभग दस हज़ार लोगों के अलावा स्पिति घाटी के बारह-तेरह हज़ार लोगों के साथ-साथ पांगी घाटी के करीब 18 हज़ार लोगों को इस सुरंग के बनने से सीधा फायदा होगा। इन लोगों ने कभी यह उम्मीद नहीं की थी कि उनकी ज़िन्दगी में ही इस सुरंग का निर्माण पूरा हो पाएगा। इंजीनियरिंग से जुड़े बेमिसाल कारनामों के चलते अब वह दिन दूर नहीं जब यहां के लोग भी सारा साल शेष दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकेंगे।

सीमा सड़क संगठन के सामने रोहतांग सुरंग का निर्माण किसी चुनौती से कम नहीं है। लगभग पौने नौ किलोमीटर लम्बी इस सुरंग में ट्रैफिक के लिए डबल लेन सड़क बनाई जाएगी, जिसकी चौड़ाई 11.25 मीटर होगी। इस सुरंग में 80 किलोमीटर प्रति घंटा की स्पीड से गाड़ियां दौड़ सकेंगी।

लाहौल घाटी के लोगों के लिए तो यह सुरंग एक नई ज़िन्दगी के समान होगी ही लेकिन पर्यटकों के लिए भी इसकी अहमियत कम नहीं होगी। पर्यटकों का सफर भी इस सुरंग के बनने से आसान हो जाएगा। 2016 में हकीकत बन जाएगी रोहतांग सुरंग।

मनाली की तरफ से इस सुरंग को सोलंग गांव के पास से बनाया जा रहा है। दूसरी तरफ लाहौल घाटी में यह सुरंग कोकसर नामक स्थान के पास से बनाई जा रही है। मनाली की तरफ से सुरंग तक जाने के लिए 14.84 किलोमीटर का सफर तय करना होगा जबकि दूसरे छोर पर यह सुरंग चंद्रा नदी के ऊपर निकलेगी। रोहतांग सुरंग तक पहुंचने वाली इस सड़क के निर्माण पर भी भारी खर्च हुआ है। लगभग 180 करोड़ रुपए की लागत से बनी इस सड़क को भी बर्फबारी के दौरान हमेशा खोले रखना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं होगा। इस सड़क के ऊपर बर्फ को रोकने के लिए अलग से एक प्रकार की छत बनाई जाएगी ताकि बर्फीले ग्लेशियर नीचे आकर सड़क को अवरुद्ध न कर दें। अगर बर्फबारी में यह सड़क बंद हो गई तो रोहतांग सुरंग को बनाने का कोई लाभ नहीं रह जाएगा।

रोहतांग सुरंग के निर्माण पर लगभग 1600 करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है। सीमा सड़क संगठन ने इस काम का ज़िम्मा ऑस्ट्रिया की एक कंस्ट्रक्शन कंपनी को सौंपा है। स्ट्रेबैग एस.ई. नाम की यह कंपनी भारतीय कंपनी एफकॉन्स इंफ्रास्ट्रक्चर लि. के साथ मिलकर स्ट्रेबैग-एफकॉन्स नाम से इस काम को कर रही है। सीमा सड़क संगठन ने निर्माण से जुड़े इंजीनियरिंग कार्यों में सलाह-मशविरा देने के लिए एक अन्य अंतर्राष्ट्रीय कंपनी एसएमईसी इंटरनेशनल प्रा.लि. को भी अपने साथ जोड़ा है।

रोहतांग सुरंग की दूसरी खासियत यह होगी कि लगभग 9 किलोमीटर लम्बी इस सुरंग के बीच स्वच्छ हवा पहुंचाने के लिए सैकड़ों पंखे एक साथ काम करेंगे। इसके अलावा दुर्घटना आदि होने की स्थिति में बचाव कार्य करने और दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को बाहर लाने के लिए भी अलग से व्यवस्था होगी। सुरंग बिजली की रोशनी से जगमग रहेगी।

रोहतांग सुरंग का निर्माण 3053 मीटर से लेकर 3080 मीटर की ऊंचाई के बीच किया जा रहा है। दुनिया में इस तरह की गिनी-चुनी सुरंगें ही हैं। चीन ने सन 2002 में शंघाई को तिब्बत से जोड़ने के लिए फेंगॉसन रेलवे सुरंग का निर्माण लगभग इसी तरह की परिस्थितियों में किया है। यह सुरंग 4,905 मीटर की अधिकतम ऊंचाई पर बनाई गई है। उधर स्विट्ज़रलैंड में भी आल्प्स पर्वत श्रृंखलाओं के बीच 312 मीटर से लेकर 549 मीटर की ऊंचाई के बीच गॉथर्ड बेस नाम से एक रेलवे टनल भी इसी तरह की इंजीनियरिंग की बेहतरीन मिसाल है।

दुनिया में अभी तक आम ट्रैफिक के लिए जितनी भी सुरंगें बनी हैं, उनका निर्माण अधिक से अधिक ढाई हज़ार मीटर की ऊंचाई पर ही किया गया है। रोहतांग के मुकाबले अगर दुनिया में इस समय दूसरी कोई सुरंग है तो वह कज़ाकिस्तान में अंजोब रोड़ टनल है। इस सुरंग की लम्बाई 5 किलोमीटर है और इसे 3,372 मीटर की ऊंचाई पर बनाया गया है। इस सुरंग की ऊंचाई तो रोहतांग सुरंग जैसी ही है लेकिन इसकी लम्बाई रोहतांग सुरंग के मुकाबले लगभग चार किलोमीटर कम है।

पाकिस्तान में भी लगभग इतनी ही ऊंचाई पर एक रेलवे टनल है, जिसे खोजक सुरंग के नाम से जाना जाता है। इसका निर्माण अंग्रेज़ों ने क्वेटा में 1891 में किया था। खोजक रेल टनल की लम्बाई सिर्फ 3.9 किलोमीटर है।

भारत में जम्मू-कश्मीर में बनिहाल के पास पीर पंजाल रेलवे टनल के नाम से लगभग 11 किलोमीटर लम्बी सुरंग का निर्माण पिछले दिनों पूरा हुआ है। यह सुरंग जम्मू-श्रीनगर रेलवे लाइन पर स्थित है। लम्बाई में भले ही यह सुरंग रोहतांग सुरंग से अधिक लम्बी हो लेकिन इसकी अधिकतम ऊंचाई रोहतांग के मुकाबले काफी कम (2,200 मीटर) है। ***(स्रोत फीचर्स)***

2014 के स्रोत सजिल्द का ऑर्डर करें

मूल्य 200 रुपए (25 रुपए डाक खर्च)